आपने लिखा

संदर्भ 68 में नसीम अख्तर का लेख 'बच्चों को आज़ादी कितनी' पढ़ा। लेख में नसीम व बच्चों के बीच जो व्यवहार बताया गया है वह काफी दोस्ताना है। इससे कहीं-कोई कक्षा का अनुशासन टूटता नज़र नहीं आता है। एक घटना में तो बच्चे उनसे आगे की कहानी सुनाने की ज़िद कर रहे हैं तथा उन्होंने उसे पूरी भी की। यहाँ बच्चों की कहानी के प्रति रुचि व उत्सुकता के बारे में पता चला, साथ ही ये भी कि नसीम द्वारा कहानी सुनाने के तरीके में शायद कोई खास बात है।

उन्हें डाँटने की बजाय स्कूल की प्राचार्या को यह जानने की कोशिश करना चाहिए थी कि नसीम जी कहानी सुनाते समय किन-किन बातों का ध्यान रखती हैं जैसे चेहरे व हाथों के हाव-भाव, अगर पात्र बच्चों के आस-पास के परिवेश से जुड़े हों तो उनके बारे में पूछना, चित्रों का प्रयोग करना आदि।

कहानी सुनने की आदत बच्चों की कल्पना शक्ति, सुनने और एकाग्रता की क्षमता, अभिव्यक्ति की क्षमता, प्रश्नों से जूझने की क्षमता आदि का विकास करती है।

सीमा राठी
जयपुर, राजस्थान

संदर्भ के अंक 68 में पी.सी.वैद्य के बारे में प्रकाशित लेख में मुझे एक गलती दिख रही है। लेख में बताया गया है कि प्रोफेसर वैद्य गुजरात विद्यापीठ के कुलपति थे जबकि वे गुजरात विद्यापीठ के नहीं बल्कि गुजरात विश्वविद्यालय के कुलपति थे। गुजरात विद्यापीठ एक डीम्ड युनिवर्सिटी है।

वसन्त वडवले
वडोदरा, गुजरात

अंक 68 में 'बच्चों को आज़ादी कितनी' लेख पढ़ा। जिन घटनाओं का आपने उल्लेख किया है वे साधारण नहीं हैं।

ये हमारी शिक्षा व्यवस्था पर सवालिया निशान है, बच्चों से लेकर शिक्षकों की आज़ादी तक। लेख में प्रयुक्त शब्द दरअसल, एक बहस की ओर इशारा करते हैं जैसे आज़ादी, अनुशासन, गलती, हिम्मत और दण्ड।

आपने जिस प्रकार बच्चों से बातचीत की वो मेरी दृष्टि में कक्षा में भययुक्त माहौल के लिए अतिआवश्यक है। अनौपचारिक संवाद बच्चों के साथ बेहतर सम्बन्ध एवं सफल कक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वही आपने किया। शिक्षा के जो उद्देश्य एन.सी.एफ. में स्पष्ट रूप से दिए गए हैं उनका तो आपने पालन किया ही है। यूँ तो गलती से भी हम सीखते हैं इसलिए गलती करने से न डरें। फिर यदि गलती की ही नहीं तो बिलकुल न डरें। उसके लिए बातचीत के ज़रिए सवाल उठाएँ।

अरुणा
प्राचार्या, बी.वी.एम. इंटरनेशनल स्कूल,
सीहोर, म.प्र.

संदर्भ अंक 69 में प्रकाशित रिनचिन एवं महीन का लेख 'यह कस्बा बदल गया है' का सम्पादित रूप पढ़िए संदर्भ की वेबसाइट www.sandarbh.eklavya.in पर।

नक्शा दाएँ-बाएँ भी घूम गया ....

संदर्भ के पिछले अंक में छपे मेरे लेख 'क्यों क्यों क्यों.....' के साथ दिए चित्र में आपने विश्व के नक्शे को न सिर्फ उल्टा, ऊपरी हिस्से को नीचे और निचले सिरे को ऊपर किया, बल्कि उसे बाएँ से दाएँ भी घुमा दिया है। नक्शे के ऊपरी सिरे को नीचे और निचले सिरे को ऊपर लाने से ऑस्ट्रेलिया और अंटार्कटिक सागर शीर्ष पर पहुँच गए हैं। यह तो ठीक है क्योंकि विश्व के नक्शे के इस तरह के चित्रण से कुछ खास फर्क नहीं पड़ता (और यह लेख में दिए गए उदाहरण को समझाने के लिए ज़रूरी भी है) लेकिन उसे बाएँ से दाएँ या इसके उलट घुमा देने से तो दुनिया की तस्वीर ही बदल जाती है। अगर हम भोपाल में चेन्नई की ओर मुँह करके खड़े हों तो मुम्बई हमारे दाएँ हाथ की ओर और कोलकाता बाएँ हाथ की ओर होगा। अब अगर हम नक्शे को ऊपर से नीचे की ओर घुमा भी दें तो इस स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आता। परन्तु अगर हम नक्शे को बाएँ से दाएँ की ओर घुमा दें तो मामला ऐसा नहीं रहता। अब मुम्बई आपके बाएँ और कोलकाता दाएँ हाथ की ओर हो जाएगा।

नक्शा ऊपर-नीचे घूमा है।

नक्शा ऊपर-नीचे के साथ दाएँ-बाएँ भी घूमा है।

अब अगर मैं ऐसी ही स्थिति में सिर के बल चलूँ तो मेरे बाएँ और दाएँ बदल जाएँगे किन्तु यदि मैं अपने सिर को भी 180 डिग्री में घुमा लूँ तो मेरा वास्तविक बायाँ और दायाँ वैसे ही बने रहेंगे। लेकिन यहाँ एक समस्या है, अगर हम अपना बायाँ हमेशा हृदय की ओर वाले हिस्से को माने। इस तरह जब मैं उल्टा चल रहा हूँ मेरा बायाँ, बायाँ ही रहेगा क्योंकि आखिरकार हृदय तो उस ओर है।

समतल दर्पण में हमारा बायाँ, छवि का दायाँ बन जाता है और दायाँ, छवि का बायाँ। इस प्रकार शीशे की दुनिया में हमारा हृदय दाईं ओर है, ऐसा हमें दिखता है।

अब अगर आप आइने के सामने खड़े होकर अपने दाएँ हिस्से के बालों पर कंघी करेंगे तो आइने का प्रतिबिम्ब बाएँ हिस्से के बाल सँवारता नज़र आएगा। इसका

मतलब है कि जब आप समतल दर्पण के सामने खड़े होंगे तो आपका बायाँ और दायाँ आपस में बदल जाएगा। और अगर आप दर्पण पर पैर रखकर खड़े हो जाएँ तो आपका प्रतिबिम्ब उल्टा नज़र आएगा, सिर नीचे की ओर दिखाई देगा।

एक और मज़ेदार बात जो हम अक्सर गौर नहीं करते कि फोटो में दिख रहे हमारे चेहरे और आइने के चेहरे में अन्तर होता है। फोटो में यह वैसा होता है जैसा दुनिया हमें देखती है जबकि आइने में, जैसा हम खुद को देखते हैं। हालाँकि यह बात थोड़ी दार्शनिक हो गई पर यह सही भी है। बेशक, आप अपनी मांग को ठीक बीच से बाँटें और चेहरे की सममिति एकदम बराबर हो तो फोटो और दर्पण के प्रतिबिम्ब में अन्तर कर पाना थोड़ा मुश्किल होगा, जैसा कि नीचे दिए चित्र में।

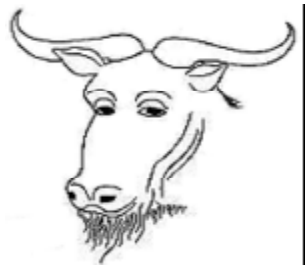

यह पता लगाना वाकई दिलचस्प होगा कि अँग्रेज़ी के कौन-से अल्फाबेट्स ऊपर-नीचे उल्टा कर देने या बाएँ से दाएँ घुमा देने या दोनों ही करने के बाद भी नहीं बदलते। ऐसा करने पर आप पाएँगे कि दोनों प्रक्रियाओं को करने का क्रम भी महत्व रखता है, यानी आप बाएँ-दाएँ पहले करें या ऊपर-नीचे। यही काम 0 से 9 तक के अंकों के साथ भी करके देखिए।

इस सब चर्चा में मैं मानकर चल रहा हूँ कि पृथ्वी कुछ सपाट-सी है, परन्तु दरअसल तो वह गोल है इसलिए आप कह सकते हैं कि जो दाईं ओर जाएगा, वह बाईं ओर से वापस आएगा।

अब सवाल यह उठता है कि दर्पण को यह कैसे पता चलता है कि कब क्या करना है? इसकी बेहतर समझ के लिए आप महान भौतिक शास्त्री रिचर्ड फाइनमेन को http://www.youtube.com/watch?v=msN87y-iEx0 पर देख सकते हैं। शायद यह विवरण आपकी कुछ मदद कर सके।

चीनू श्रीनिवासन
वडोदरा, गुजरात

पहचानकर बताइए - सही जवाब है ....

संदर्भ अंक 68 के अन्दरूनी पिछले आवरण पर पूछे गए सवाल 'पहचान कर बताइए - क्या है यह?' का सही उत्तर दिया है अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड के नन्दावल्लभ पन्त जी ने। ***'कॉकरोच'*** *इस प्रश्न का सही उत्तर है। इन्हें उपहार पुस्तक भेजी जा रही है।*

–सम्पादक मण्डल